श्री बगला सहस्रनाम-साधना

सम्पादक

'कुल-भूषण' पण्डित रमादत्त शुक्ल, एम० ए०

प्रकाशक

कल्याण मन्दिर प्रकाशन

अलोपीबाग मार्ग, प्रयाग-६

श्रीवगला
सहस्र-नाम-साधना

सम्पादक

'कुल-भूषण' पं० रमादत्त शुक्ल, एम० ए०

प्रकाशक

कल्याण मन्दिर प्रकाशन
अलोपीबाग मार्ग, प्रयाग—६

प्रथम संस्करण] संवत् २०४१ [मूल्य २·००

अ नु क्र म णि का

प्राक्कथन

प्रस्तुत पुस्तिका में पृष्ठ १ पर प्रकाशित स्तोत्र के आधार पर भगवती वगलामुखी के नामों द्वारा साधना की विधि स्पष्ट की गई है। इन नामों के चतुर्थ्यन्त रूप भी पृ० (७) पर दिए गए हैं। इसी के अनुसार अन्य १०८ या १००८ नामों के चतुर्थ्यन्त रूप लिख-कर उनके द्वारा श्रीवगलोपासक जप-पूजन-तर्पण-होम कर अपनी साधना में सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

आशा है कि इस प्रकाशन से 'नाम' द्वारा विशेष उपासना करने की प्रेरणा साधकों को मिलेगी। यही हमारा उद्देश्य है।

प्रयाग
श्रावण पूर्णिमा २०४१

—कुलभूषण

अष्टोत्तर-शतनाम-पद्धति

सङ्कल्प—ॐ तत् सत् अद्यैतस्य ब्रह्मणोह्नि द्वितीय-प्रहरार्द्धे श्वेत-वराह कल्पे जम्बू-द्वीपे भरत-खण्डे आर्यावर्त-देशे पुण्य-क्षेत्रे कलियुगे कलि-प्रथम-चरणे अमुक-सम्वत्सरे अमुक-मासे अमुक-पक्षे अमुक-तिथौ अमुक-वासरे अमुक-शर्मा (वर्मा, गुप्तो, दासो वा) अहं श्रीवगलामुखी-प्रीत्यर्थं अष्टोत्तर-शत-नाम-मन्त्रैः यथा-शक्ति यजनं करिष्ये ।

अधिकारी साधक उक्त सङ्कल्प के स्थान पर 'तान्त्रिक पञ्चाङ्ग' के अनुसार सङ्कल्प करें । यथा—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं पूर्णे, षं सत्ये, हं शवले, ह्स्ख्फ्रें खर्वे, क्लीं रामे, ह्स्ख्फ्रें खर्वे, क्लीं रामे, स्हख्फ्रें महा-परिवृत्तौ. थं अष्टादश - परिवृत्तौ, शून्यं महा - युगे, खं तृतीय - युगे, नं प्राण - तत्वे, एक - विंशति - वर्षे, अमुक-ऋतौ, अमुक-मासे, अमुक-लघु-मासे, अमुक-पक्षे, अमुक-नक्षत्रे, अमुक-योगे, अमुक-करणे, अमुकी विद्यायां, अमुकी-महाविद्यायां, अमुक-वासरे शाम्भव-गोत्रोत्पन्नोऽमुकानन्द - नाथोऽहं श्रीवगलामुखी-प्रीत्यर्थे अष्टोत्तर-शत-नाम-मन्त्रैः यथा-शक्ति यजनं करिष्ये ।

विनियोग—ॐ अस्य श्रीवगलामुखी-नाम-माला-मन्त्रस्य श्रीनारद ऋषिः। बृहती छन्दः। श्री वगला-मुखी देवता। लं बीजं। हूँ शक्तिः। ईं कीलकं। श्री वगलामुखी-प्रीत्यर्थं श्रीवगलामुखी-अष्टोत्तर-शतनाम-जपे विनियोगः।

अष्टोत्तर-शत-नामावली के नाम-मन्त्रों के 'जप'-यज्ञ का अनुष्ठान करते समय उक्त विनियोग करना चाहिए। यदि नाम-मन्त्रों के द्वारा 'पूजन' करना हो, तो 'जपे विनियोगः' के स्थान पर 'पूजने विनियोगः' पढ़ें और यदि 'पूजन' के साथ 'तर्पण' भी करना हो, तो 'पूजने तर्पणे च विनियोगः' पढ़ें। नाम-मन्त्रों से 'होम' करना हो, तो 'होमे विनियोगः' पढ़ें।

ऋष्यादि-न्यास—	श्रीनारद--ऋषये नमः	शिरसि
	बृहती--छन्दसे नमः	मुखे
	श्रीवगलामुखी-देवतायै नमः	हृदि
	लं बीजाय नमः	गुह्ये
	हुं शक्तये नमः	पादयोः
	ईं कीलकाय नमः	नाभौ

श्रीबगलामुखी-प्रीत्यर्थं नाम-जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

नाम-मन्त्र द्वारा पूजन करते समय 'नाम-जपे' के स्थान पर 'नाम-पूजने' और पूजन-तर्पण दोनों करते समय 'नाम-पूजन-तर्पणे च' पढ़ें तथा यदि होम करना हो, तो 'नाम-होमे' पढ़ें ।

षडङ्ग न्यास—	कर	अङ्ग
ह्लां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ह्लीं	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ह्लूं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ह्लैं	अनामिकाभ्यां हुं	कवचाय हुं
ह्लौं	कनिष्ठाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
ह्लः	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यान—मध्ये सुधाब्धि मणि-मण्डप-रत्न-वेद्याम्

सिंहासनोपरि-गतां परिपीत-वर्णाम् ।

पीताम्बराभरण-माल्य-विभूषिताङ्गीम्

देवीं नमामि धृत-मुद्गर-वैरि-जिह्वाम् ॥

मानस पूजन—लं पृथ्व्यात्मकं गन्धं समर्पयामि, हं आकाशात्मकं पुष्पं०, यं वाय्वात्मकं धूपं०, रं वह्न्यात्मकं दीपं०, वं अमृतात्मकं नैवेद्यं, सं सर्वात्मकं ताम्बूलं० ।

अष्टोत्तर-शत-नामावली द्वारा १ जप या २ पूजन अथवा ३ पूजन-तर्पण या ४ होम—

जप-प्रयोग में प्रत्येक चतुर्थ्यन्त नाम-मन्त्र के आदि में 'ॐ ह्लीं' और अन्त में 'नमः' जोड़ लें। पूजन-प्रयोग में प्रत्येक मन्त्र के अन्त में 'नमः' के स्थान पर 'पूजयामि नमः' जोड़ें। पूजन के साथ तर्पण भी करना हो, तो अन्त में 'पूजयामि नमः तर्पयामि नमः' जोड़ लें। हवन करते समय अन्त में 'नमः स्वाहा' जोड़ना चाहिए। उदाहरण के लिए प्रथम चतुर्थ्यन्त नाम-मन्त्र 'वगलायै' के उक्त चारों प्रयोग-रूप निम्न प्रकार होंगे—

१ जपार्थ—ॐ ह्लीं वगलायै नमः।

२ पूजन—ॐ ह्लीं वगलायै पूजयामि नमः।

३ पूजन-तर्पण—ॐ ह्लीं बगलायै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः।

४ होम—ॐ ह्लीं बगलायै नमः स्वाहा।

होम करने की अवस्था में 'चक्र-पूजा' (श्री बाला-नित्यार्चन) के पृष्ठ १२१ पर दी गई विधि के अनुसार होमाग्नि की प्रतिष्ठा कर लें।

चतुर्थ्यन्त

अष्टोत्तर-शत-नामावली

वगलायै, विष्णु-वनितायै, विष्णु-शङ्कर-भामिन्यै,
बहुलायै, वेद-मात्रे, महा-विष्णु-प्रस्वै,
महा-मत्स्यायै, महा-कूर्मायै,
महा-वाराह-रूपिण्यै, नरसिंह-प्रियायै ॥१०॥
रम्यायै, वामनायै, वटु-रूपिण्यै,
जामदग्न्य-स्वरूपायै, रामायै, राम-प्रपूजितायै,
कृष्णायै, कपर्दिन्यै, कृत्यायै, कलहायै ॥२०॥
कल-कारिण्यै, बुद्धि-रूपायै, बुद्ध-भार्यायै,
बौद्ध-पाखण्ड-खण्डिन्यै, कल्कि-रूपायै, कलि-हरायै,
कलि-दुर्गति-नाशिन्यै, कोटि-सूर्य-प्रतिकाशायै,
कोटि-कन्दर्प-मोहिन्यै, केवलायै ॥३०॥
कठिनायै, काल्यै, कलायै, कैवल्य-दायिन्यै,
केशव्यै, केशवाराध्यायै, किशोर्यै,
केशव-स्तुतायै, रुद्र-रूपायै, रुद्र-मूर्त्यै ॥४०॥
रुद्राण्यै, रुद्र-देवतायै, नक्षत्र-रूपायै, नक्षत्रायै,
नक्षत्रेश-प्रपूजितायै, नक्षत्रेश-प्रियायै, नित्यायै,
नक्षत्र-पति-वन्दितायै, नागिन्यै, नाग-जनन्यै ॥५०॥
नाग-राज-प्रवन्दितायै, नागेश्वर्यै, नाग-कन्यायै,

नागर्यै, नगात्मजायै, नगाधिराज-तनयायै,
नग-राज-प्रपूजितायै, नवीनायै, नीरदायै, पीतायै ।।६०
श्यामायै, सौन्दर्य-कारिण्यै, रक्तायै, नीलायै,
घनायै, शुभ्रायै, श्वेतायै,
सौभाग्य-दायिन्यै, सुन्दर्यै, सौभगायै ।।७०।।
सौम्यायै, स्वर्णाभायै, स्वर्गति-प्रदायै,
रिपु-त्रास-कर्यै, रेखायै, शत्रु-संहार-कारिण्यै,
भामिन्यै, मायायै, स्तम्भिन्यै, मोहिन्यै ।।८०।।
शुभायै, राग-द्वेष-कर्यै, रात्र्यै, रौरव-ध्वंस-कारिण्यै,
यक्षिण्यै, सिद्ध-निवहायै, सिद्धेशायै,
सिद्धि-रूपिण्यै, लङ्का-पति-ध्वंस-कर्यै,
लङ्केश-रिपु-वन्दितायै ।।९०।।
लङ्का-नाथ-कुल-हरायै, महा-रावण-हारिण्यै,
देव-दानव-सिद्धौघ-पूजितायै, परमेश्वर्यै,
पराणु-रूपायै, परमायै, पर-तन्त्र-विनाशिन्यै,
वरदायै, वरदाराध्यायै, वर-दान-परायणायै ।।१००।।
वर-देश-प्रियायै, वीरायै, वीर-भूषण-भूषितायै,
वसुदायै, बहुदायै, वाण्यै, ब्रह्म-रूपायै,
वराननायै, बलदायै, पीत-वसनायै
पीत-भूषण-भूषितायै, पीत-पुष्प-प्रियायै,
पीत-हरायै, पीत-स्वरूपिण्यै ।।११४।।

श्रीबगलाष्टोत्तर-शत-नाम-स्तोत्रम्

श्रीनारद उवाच—

भगवन्, देव-देवेश ! सृष्टि - स्थिति - लयात्मकं ।
शतमष्टोत्तरं नाम्नां बगलाया वदाधुना ।। १

श्रीभगवानुवाच—

शृणु वत्स ! प्रवक्ष्यामि नाम्नामष्टोत्तरं शतं ।
पीताम्बर्याः महा-देव्याः स्तोत्रं पाप-प्रणाशनं ।। २
यस्य प्रपठनात् सद्यो वादी मूको भवेत् क्षणात् ।
रिपूणां स्तम्भनं याति सत्यं सत्यं वदाम्यहं ।। ३

विनियोग—ॐ अस्य श्रीपीताम्बरायाः शतमष्टोत्तरं नाम्नां स्तोत्रस्य श्रीसदा-शिव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीपीताम्बरा देवता, श्रीपीताम्बरा-प्रीतये पाठे विनियोगः ।

अष्टोत्तर-शतनाम-स्तोत्रं—

ॐ बगला विष्णु-वनिता विष्णु-शङ्कर-भामिनी ।
बहुला वेद-माता च महा - विष्णु - प्रसूरपि ।। ४
महा-मत्स्या महा-कूर्मा महा-वाराह-रूपिणी ।
नरसिंह-प्रिया रम्या वामना वटु-रूपिणी ।। ५
जामदग्न्य - स्वरूपा च रामा राम-प्रपूजिता ।
कृष्णा कपर्दिनी कृत्या कलहा कल-कारिणी ।। ६

बुद्धि-रूपा बुद्ध-भार्या बौद्ध-पाखण्ड-खण्डिनी ।
कल्कि-रूपा कलि-हरा कलि-दुर्गति-नाशिनी ॥ ७

कोटि-सूर्य-प्रतीकाशा कोटि-कन्दर्प-मोहिनी ।
केवला कठिना काली कला कैवल्य - दायिनी ॥ ८

केशवी केशवाराध्या किशोरी केशव - स्तुता ।
रुद्र - रूपा रुद्र - मूर्तिः रुद्राणी रुद्र - देवता ॥ ९

नक्षत्र - रूपा नक्षत्रा नक्षत्रेश - प्रपूजिता ।
नक्षत्रेश - प्रिया नित्या नक्षत्र - पति-वन्दिता ॥ १०

नागिनी नाग - जननी नाग-राज-प्रवन्दिता ।
नागेश्वरी नाग-कन्या नागरी च नगात्मजा ॥ ११

नगाधिराज - तनया नग - राज - प्रपूजिता ।
नवीना नीरदा पीता श्यामा सौन्दर्य-कारिणी ॥ १२

रक्ता नीला घना शुभ्रा श्वेता सौभाग्य-दायिनी ।
सुन्दरी सौभगा सौम्या स्वर्णाभा स्वर्गति-प्रदा ॥ १३

रिपु-त्रास-करी रेखा शत्रु - संहार - कारिणी ।
भामिनी च तथा माया स्तम्भिनी मोहिनी शुभा ॥ १४

राग-द्वेष-करी रात्री रौरव-ध्वंस-कारिणी ।
यक्षिणी सिद्ध-निवहा सिद्धेशा सिद्धि-रूपिणी ॥ १५

लङ्का-पति-ध्वंस-करी लङ्केश-रिपु-वन्दिता ।
लङ्का-नाथ-कुल-हरा महा-रावण-हारिणी ॥ १६

देव - दानव - सिद्धौघ - पूजिता परमेश्वरी ।
पराणु - रूपा परमा पर - तन्त्र - विनाशिनी ॥ १७

वरदा वरदाऽऽराध्या वर - दान - परायणा ।
वर-देश - प्रिया वीरा वीर - भूषण - भूषिता ॥ १८

वसुदा बहुदा वाणी ब्रह्म - रूपा वरानना ।
बलदा पीत - वसना पीत - भूषण - भूषिता ॥ १९

पीत-पुष्प-प्रिया पीत-हारा पीत-स्वरूपिणी ।
शुभं ते कथितं विप्र ! नाम्नामष्टोत्तरं शतं ॥ २०

फल-श्रुति

यः पठेत् पाठयेद् वापि शृणुयाद् वा समाहितः ।
तस्य शत्रुः क्षयं सद्यो याति वै नात्र संशयः ॥ २१

प्रभात-काले प्रयतो मनुष्यः,
पठेत् सु-भक्त्या परिचिन्त्य पीताम् ।
द्रुतं भवेत् तस्य समस्त-वृद्धि-
विनाशमायाति च तस्य शत्रुः ॥ २२

॥ श्रीविष्णु-यामले श्रीनारद-विष्णु-सम्वादे श्री बगलाष्टोत्तर-शत-नाम-स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

सर्व-सिद्धि-प्रद

श्रीबगलाष्टोत्तर-शतनाम स्तोत्रम्

ब्रह्मास्त्र-रूपिणी देवी माता श्रीबगलामुखी ।
चिच्छक्तिर्ज्ञान-रूपा च ब्रह्मानन्द-प्रदायिनी ॥ १
महा-विद्या महा-लक्ष्मी श्रीमत्-त्रिपुर-सुन्दरी ।
भुवनेशी जगन्माता पार्वती सर्व-मङ्गला ॥ २
ललिता भैरवी शान्ता अन्नपूर्णा कुलेश्वरी ।
वाराही छिन्नमस्ता च तारा काली सरस्वती ॥ ३
जगत्-पूज्या महा-माया कामेशी भग-मालिनी ।
दक्ष-पुत्री शिवाङ्कस्था शिव-रूपा शिव-प्रिया ॥ ४
सर्व-सम्पत्-करी देवी सर्व-लोक-वशङ्करी ।
वेद-विद्या महा-पूज्या भक्ताद्वेषी भयङ्करी ॥ ५
स्तम्भ-रूपा स्तम्भिनी च दुष्ट-स्तम्भन-कारिणी ।
भक्त-प्रिया महा-भोगा श्रीविद्या ललिताम्बिका ॥ ६
मेना-पुत्री शिवानन्दा मातङ्गी भुवनेश्वरी ।
नारसिंही नरेन्द्रा च नृपाराध्या नरोत्तमा ॥ ७
नागिनी नाग-पुत्री च नगराज-सुता उमा ।
पीताम्बा पीत-पुष्पा च पीत-वस्त्र-प्रिया शुभा ॥ ८
पीत-गन्ध-प्रिया रामा पीत-रत्नार्चिता शिवा ।
अर्द्ध-चन्द्र-धरी देवी गदा-मुद्गर-धारिणी ॥ ९

सावित्री त्रि-पदा शुद्धा सद्यो राग-विवर्द्धिनी ।
विष्णु-रूपा जगन्मोहा ब्रह्म-रूपा हरि-प्रिया ।। १०

रुद्र-रूपा रुद्र-शक्तिश्चिन्मयी भक्त-वत्सला ।
लोक-माता शिवा सन्ध्या शिव-पूजन-तत्परा ।। ११

धनाध्यक्षा धनेशी च धर्मदा धनदा धना ।
चण्ड - दर्प - हरी देवी शुम्भासुर - निर्बर्हिणी ।। १२

राज - राजेश्वरी देवी महिषासुर - मर्दिनी ।
मधु-कैटभ-हन्त्री च रक्त-बीज-विनाशिनी ।। १३

धूम्राक्ष-दैत्या-हन्त्री च चण्डासुर-विनाशिनी ।
रेणु-पुत्री महा-माया भ्रामरी भ्रमराम्बिका ।। १४

ज्वाला-मुखी भद्र-काली बगला शत्रु-नाशिनी ।
इन्द्राणी इन्द्र-पूज्या च गुह-माता गुणेश्वरी ।। १५

वज्र-पाश-धरा देवी जिह्वा-मुद्गर-धारिणी ।
भक्तानन्द-करी देवी बगला परमेश्वरी ।। १६

फल-श्रुति

अष्टोत्तर-शतं नाम्ना बगलायास्तु यः पठेत् ।
रिपु-बाधा-विनिर्मुक्तः लक्ष्मी-स्थैर्यमवाप्नुयात् ।। १७

भूत-प्रेत-पिशाचाश्च ग्रह-पीडा-निवारणम् ।
राजानो वशमायाति सर्वैश्वर्यं च विन्दति ।। १८

नाना-विद्यां च लभते राज्यं प्राप्नोति निश्चितम् ।
भुक्ति-मुक्तिमवाप्नोति साक्षात् शिव-समो भवेत् ।। १९

।। श्रीरुद्र-यामले सर्व-सिद्धि-प्रद श्रीबगलाष्टोत्तर-शतनाम स्तोत्रं ।।

श्रीबगलामुखी सहस्रनाम-स्तोत्रम्

सुरालय - प्रधाने तु देव - देवं महेश्वरं ।
शैलाधिराज - तनया संग्रहे तमुवाच ह ।। १

श्रीदेव्युवाच

परमेष्ठिन्, परं धाम, प्रधान, परमेश्वर !
नाम्नां सहस्रं बगलामुख्यास्त्वं ब्रूहि वल्लभ ।। २

श्रीईश्वरोवाच

शृणु देवि ! प्रवक्ष्यामि नाम-धेय-सहस्रकं ।
पर-ब्रह्मास्त्र - विद्यायाश्चतुर्वर्ग-फल-प्रदम् ।। ३
गुह्याद् गुह्य-तरं देवि! सर्व-सिद्धैक-वन्दितं ।
अति-गुप्त-तरं सर्व-विद्या-तन्त्रेषु गोपितं ।। ४
विशेषतः कलियुगे महा-सिद्ध्योघ-दायि तत् ।
गोपनीयं गोपनीयं गोपनीयं प्रयत्नतः ।। ५
स्तम्भिनी राज-सैन्यानां वादिनो पर-वादिनाम् ।
रोधिनी विघ्न-संघानां मोहिनी सर्व-योषितां ।। ६
पुरा चैकार्णवे घोरे काले परम - भैरवः ।
सुन्दरी-सहितो देवः केशवः क्लेश-नाशनः ।। ७
उरगासनमासीनो योग-निद्रामुपागमत् ।
निद्रा-काले च ते काले मया प्रोक्तः सनातनः ।। ८

महा-स्तम्भ-करं देवो-स्तोत्रं वा शत-नामकं ।
सहस्र-नाम परमं वद देवस्य कस्यचित् ॥ ९

श्रीभगवानुवाच

शृणु शङ्कर, देवेश ! परमाति-रहस्यकम् ।
अजोऽहं यत्प्रसादेन विष्णुः सर्वेश्वरेश्वरः ॥ १०
अप्रकाश्यमिदं सत्यं स्व-योनिरिव सुव्रते !
गोपनीयं प्रयत्नेन प्रकाशात् सिद्धि-हानि-कृत् ॥११

ॐ अस्य श्रीपीताम्बरा-सहस्रनाम-स्तोत्र-मन्त्रस्य श्री सदाशिव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीजगद्वश्यकरी पीताम्बरा देवता, सर्वाभीष्ट-सिद्धयर्थे पाठे विनियोगः ।

पीताम्बर-परीधानां पीनोन्नत-पयोधराम् ।
जटा-मुकुट-शोभाढ्यां पीत-भूमि सुखासनां ॥ १२
शत्रोर्जिह्वां मुद्गरं च बिभ्रतीं परमां कलाम् ।
सर्वागम-पुराणेषु विख्यातां भुवन-त्रये ॥ १३
सृष्टि-स्थिति-विनाशानामादि-भूतां महेश्वरीं ।
गोप्यां सर्व-प्रयत्नेन शृणु तां कथयामि ते ॥ १४
जगद्-विध्वंसिनीं देवीमजरामर-कारिणीं ।
तां नमामि महा-मायां महदैश्वर्य-दायिनीं ॥ १५
प्रणवं पूर्वमुद्धृत्य स्थिर-मायां ततो वदेत् ।
बगलामुखि सर्वेति दुष्टानां वाचमेव च ॥ १६
मुखं पदं स्तम्भयेति जिह्वां कीलय बुद्धिमत् ।
विनाशयेति तारं च स्थिर-मायां ततो वदेत् ॥ १७

वह्नि-प्रियां ततो मन्त्रश्चतुर्वर्ग - फल-प्रदः ।
ब्रह्मास्त्रं ब्रह्म-विद्या च ब्रह्म-माया सनातनी ॥ १८
ब्रह्मेशी ब्रह्म-कैवल्यं बगला ब्रह्म-चारिणी ।
नित्यानन्दा नित्य-सिद्धा नित्य-रूपा निरामया ॥ १९
सन्धारिणी महा-माया कटाक्ष-क्षेम-कारिणी ।
कमला विमला लीला रत्न-कान्तिर्गुणाश्रिता ॥ २०
मङ्गला विजया जाया सर्व-मङ्गल-कारिणी ।
कामिनी कामनी काम्या कामुका काम-चारिणी॥२१
काम-प्रिया काम-रता कामा काम-स्वरूपिणी ।
कामाख्या काम-बीजस्था काम-पीठ-निवासिनी ॥२२
कामदा कामहा काली कपाली च करालिका ।
कंसारिः कमला कामा कैलासेश्वर-वल्लभा ॥ २३
कात्यायनी केशवा च करुणा काम-केलि-भुक् ।
क्रिया कीर्तिः कृत्तिका च काशिका मथुरा शिवा॥२४
कालाक्षी कालिका काली धवलानन-सुन्दरी ।
खेचरी च ख-मूर्तिश्च क्षुद्रा क्षुद्र-क्षुधा वरा ॥ २५
खड्ग-हस्ता खड्ग-रता खड्गिनी खर्पर-प्रिया ।
गङ्गा गौरी गामिनी च गीता गोत्र-विवर्द्धिनी ॥ २६
गोधरा गोकरा गोधा गन्धर्व-पुर-वासिनी ।
गन्धर्वा गन्धर्व-कला गोपनी गरुड़ासना ॥ २७

गोविंद-भावा गोविंदा गांधारी गन्ध-मादिनी।
गौराङ्गी गोपिका-मूर्तिर्गोपी गोष्ठ-निवासिनी ॥ २८

गन्धा गजेन्द्रगा मान्या गदाधर-प्रिया ग्रहा ।
घोर-घोरा घोर-रूपा घन-श्रोणी घन-प्रभा ॥ २९

दैत्येन्द्र-प्रबला घण्टा-वादिनी घोर-निःस्वना ।
डाकिन्युमा उपेन्द्रा च उर्वशी उरगासना ॥ ३०

उत्तमा उन्नता उन्ना उत्तम-स्थान-वासिनी ।
चामुण्डा मुण्डिका चण्डी चण्ड-दर्प-हरेति च ॥ ३१

उग्रचण्डा चण्ड-चण्डा चण्ड-दैत्य-विनाशिनी ।
चण्ड-रूपा प्रचण्डा च चण्डा चण्ड-शरीरिणी ॥ ३२

चतुर्भुजा प्रचण्डा च चराचर - निवासिनी ।
छत्र-प्राय-शिरोवाहा छला छल-तरा छली ॥ ३३

छत्र - रूपा छत्र-धरा छत्रिय-छय-कारिणी ।
जया च जय-दुर्गा च जयन्ती जयदा परा ॥ ३४

जायिनी जयिनी ज्योत्स्ना जटाधर-प्रियाऽजिता ।
जितेन्द्रिया जित-क्रोधा जय-माना जनेश्वरी ॥ ३५

जित-मृत्युर्जरातीता जाह्नवी जनकात्मजा ।
झंकारा झंझरी झण्टा झंकारी झक-शोभिनी ॥ ३६

झखा झमेशा झंकारी-योनि-कल्याण-दायिनी ।
झर्झरा झमुरी झारा झरा झर - तरा-परा ॥ ३७

झंझा झमेता झंकारो झणा-कल्याण-दायिनी ।
ञमना-मानसी-चिन्त्या ञमुना-शंकर-प्रिया ।। ३८

टंकारी टिटिका टीका टंकिनी च ट-वर्गगा ।
टापा टोपा टट-पतिष्टमनो टमन - प्रिया ।। ३९

ठकार-धारिणी ठीका ठंकरी ठिकर-प्रिया ।
ठेक-ठासा ठकरती ठामिनी ठमन-प्रिया ।। ४०

डारहा डाकिनी डारा डामरा डमर-प्रिया ।
डाकिनी डड-युक्ता च डमरु-कर-वल्लभा ।। ४१

ढक्का ढक्की ढक्क-नादा ढोल-शब्द-प्रबोधिनी ।
ढामिनी ढामन-प्रीता ढग-तन्त्र-प्रकाशिनी ।। ४२

अनेक-रूपिणी अम्बा अणिमा-सिद्धि-दायिनी ।
अमन्त्रिणी अणु-करी अणुमद्-भानु-संस्थिता ।। ४३

तारा तन्त्रवतीं तन्त्र-तत्व-रूपा तपस्विनी ।
तरङ्गिणी तत्व-परा तन्त्रिका तन्त्र-विग्रहा ।। ४४

तपो-रूपा तत्व-दात्री तपः-प्रीति-प्रधर्षिणी ।
तन्त्र - यन्त्रार्चन-परा तलातल-निवासिनी ।। ४५

तल्पदा त्वल्पदा काम्या स्थिरा स्थिरतरा स्थितिः ।
स्थाणुप्रिया स्थलपरा स्थिता स्थानप्रदायिनी ।। ४६

दिगम्बरा दया-रूपा दावाग्नि-दमनी दमा ।
दुर्गा दुर्ग-परा देवी दुष्ट-दैत्य-विनाशिनी ।। ४७

दमन - प्रमदा दैत्य - दया दान - परायणा ।
दुर्गार्ति-नाशिनी दान्ता दम्भिनी दम्भ-वर्जिता ।। ४८

दिगम्बर-प्रिया दम्भा दैत्य-दम्भ-विदारिणी ।
दमना दन्त-सौन्दर्या दानवेन्द्र-विनाशिनी ।। ४९

दयाधारा च दमनी दर्भ-पत्र-विलासिनी ।
धरिणी धारिणी धात्री धराधर-धर-प्रिया ।। ५०

धराधर-सुता देवी सुधर्मा धर्म - चारिणी ।
धर्मज्ञा धवला धूला धनदा धन - वर्द्धिनी ।। ५१

धीराऽधीरा धीर-तरा धीर-सिद्धि-प्रदायिनी ।
धन्वन्तरि-धरा धीरा ध्येया ध्यान-स्वरूपिणी ।। ५२

नारायणी नारसिंही नित्यानन्दा नरोत्तमा ।
नक्ता नक्तवती नित्या नील-जीमूत-सन्निभा ।। ५३

नीलाङ्गी नील-वस्त्रा च नील-पर्वत-वासिनी ।
सुनील-पुष्प-खचिता नील-जम्बु-सम-प्रभा ।। ५४

नित्याख्या षोडशी विद्या नित्या नित्य-सुखावहा ।
नर्मदा नन्दनानन्दा नन्दानन्द-विवर्द्धिनी ।। ५५

यशोदानन्द-तनया नन्दनोद्यान-वासिनी ।
नागान्तका नाग-वृद्धा नाग-पत्नी च नागिनी ।। ५६

नमिताशेष-जनता नमस्कार-वती नमः ।
पीताम्बरा पार्वती च पीताम्बर-विभूषिता ।। ५७

पीत-माल्याम्बर-धरा पीताभा पिङ्ग-मूर्द्धजा ।
पीत - पुष्पार्चन - रता पीत - पुष्प - समर्चिता ।। ५८

पर-प्रभा पितृ - पतिः पर-सैन्य-विनाशिनी ।
परमा पर-तन्त्रा च पर-मन्त्रा परात्परा ।। ५९

परा-विद्या परा-सिद्धिः परा-स्थान-प्रदायिनी ।
पुष्पा पुष्पवती नित्या पुष्प-माला-विभूषिता ।। ६०
पुरातना पूर्व-परा पर-सिद्धि - प्रदायिनी ।
पीता-नितम्बिनी पीता पीनोन्नत-पयस्विनी ।। ६१

प्रेमा प्र-मध्यमाशेषा पद्म-पत्र-विलासिनी ।
पद्मावती पद्म-नेत्रा पद्मा पद्म-मुखी परा ।। ६२
पद्मासना पद्म-प्रिया पद्म-राग-स्वरूपिणी ।
पावनी पालिका पात्री परदा वरदा शिवा ।। ६३

प्रेत-संस्था परानन्दा पर-ब्रह्म-स्वरूपिणी ।
जिनेश्वर-प्रिया-देवी पशु-रक्त-रति-प्रिया ।। ६४
पशु-मांस-प्रियाऽपर्णा परामृत-परायणा ।
पाशिनी पाशिका चापि पशुघ्नी पशु-भक्षिणी ।। ६५

फुल्लारविन्द-वदना फुल्लोत्पल-शरीरिणी ।
परानन्द-प्रदा वीणा पशु-पाश-विनाशिनी ।। ६६

फूत्कारा फूत्परा फेनी फुल्लेंदीवर-लोचना ।
फट्मंत्रा स्फटिका स्वाहा स्फोटा च फट्-स्वरूपिणी।।६७

स्फाटिका घुटिका घोरा स्फटिकाद्रि-स्वरूपिणी ।
वराङ्गना वर-धरा वाराही वासुकी वरा ॥ ६८

विंदुस्था विंदुनी वाणी विंदु-चक्र-निवासिनी ।
विद्याधरी विशालाक्षी काशी-वासि-जन-प्रिया ॥ ६९

वेद-विद्या विरूपाक्षी विश्व-युग् बहु-रूपिणी ।
ब्रह्म-शक्तिर्विष्णु-शक्तिः पञ्च-वक्त्रा शिव-प्रिया ॥ ७०

वैकुण्ठ-वासिनी देवी वैकुण्ठ-पद-दायिनी ।
ब्रह्म-रूपा विष्णु-रूपा पर-ब्रह्म - महेश्वरी ॥ ७१

भव-प्रिया भवोद्भावा भव-रूपा भवोत्तमा ।
भवापारा भवाधारा भाग्य-वत्-प्रिय-कारिणी ॥ ७२

भद्रा सुभद्रा भवदा शुम्भ-दैत्य-विनाशिनी ।
भवानी भैरवी भीमा भद्र-काली सुभद्रिका ॥ ७३

भगिनी भग-रूपा च भग-माना भगोत्तमा ।
भग-प्रिया भगवती भग-वासा भगाकरा ॥ ७४

भग-सृष्टा भाग्यवती भग-रूपा भगासिनी ।
भग-लिङ्ग-प्रिया देवी भग-लिङ्ग-परायणा ॥ ७५

भग-लिङ्ग-स्वरूपा च भग-लिङ्ग-विनोदिनी ।
भग-लिङ्ग-रता देवी भग-लिङ्ग-निवासिनी ॥ ७६

भग-माला भग-कला भगाधारा भगाम्बरा ।
भग-वेगा भग-भूषा भगेन्द्रा भाग्य-रूपिणी ॥ ७७

भग-लिङ्गाङ्ग-सम्भोगा भग-लिङ्गासवावहा ।
भग-लिङ्ग-स-माधुर्या भग-लिङ्ग-निवेशिता ॥ ७८

भग-लिङ्ग-सुपूज्या च भग-लिङ्ग-समन्विता ।
भग-लिङ्ग-विरक्ता च भग-लिङ्ग-समावृता ॥ ७९

माधवी माधवी-मान्या मधुरा मधु-मानिनी ।
मन्द-हासा महा-माया मोहिनी महदुत्तमा ॥ ८०

महा-मोहा महा-विद्या महा-घोरा महा-स्मृतिः ।
मनस्विनी मान-वती मोदिनी मधुरानना ॥ ८१

मेनका मानिनी मान्या मणि-रत्न-विभूषणा ।
मल्लिका मौलिका माला मालाधर-मदोत्तमा ॥ ८२

मदना सुन्दरी मेधा मधु-मत्ता मधु - प्रिया ।
मत्त-हंसा समोन्नासा मत्त-सिंह-महासना ॥ ८३

महेन्द्र-वल्लभा भीमा मौल्यं च मिथुनात्मजा ।
महा-काला महा-काली महा-बुद्धिर्महोत्कटा ॥ ८४

महेश्वरी महा-माया महिषासुर-घातिनी ।
मधुरा कीर्ति-मत्ता च मत्त-मातङ्ग-गामिनी ॥ ८५

मद-प्रिया मांस-रता मत्त-युक्-काम-कारिणी ।
मैथुन्य-वल्लभा देवी महानन्दा महोत्सवा ॥ ८६

मरीचिर्मा-रतिर्माया मनो-बुद्धि-प्रदायिनी ।
मोहा मोक्षा महा-लक्ष्मीर्महत्पद-प्रदायिनी ॥ ८७

यम-रूपा च यमुना जयन्ती च जय-प्रदा।
याम्या यम-वती युद्धा यदोः कुल-विवर्द्धिनी ॥ ८८

रमा रामा राम-पत्नी रत्न-माला रति-प्रिया।
रत्न-सिंहासनस्था च रत्नाभरण-मण्डिता ॥ ८९

रमणी रमणीया च रत्या रस-परायणा।
रसानन्दा रसवती रघूणां कुल-वर्द्धिनी ॥ ९०

रमणारि-परिभ्राज्या रैधा राधिक-रत्नजा।
रावी रस-स्वरूपा च रात्रि-राज-सुखावहा ॥ ९१

ऋतुजा ऋतुदा ऋद्धा ऋतु-रूपा ऋतु-प्रिया।
रक्त-प्रिया रक्त-वती रङ्गिणी रक्त-दन्तिका ॥ ९२

लक्ष्मीर्लज्जा च लतिका लीला-लग्ना निताक्षिणी।
लीला लीलावती लोमा हर्षाह्लादन-पट्टिका ॥ ९३

ब्रह्म-स्थिता ब्रह्म-रूपा ब्रह्माणी वेद-वन्दिता।
ब्रह्मोद्भवा ब्रह्म-कला ब्रह्माणी ब्रह्म-बोधिनी ॥ ९४

वेदाङ्गना वेद-रूपा वनिता विनता वसा।
बाला च युवती वृद्धा ब्रह्म-कर्म-परायणा ॥ ९५

विंध्यस्था विंध्य-वासी च विंदु-युक् विंदु-भूषणा।
विद्यावती वेद-धारी व्यापिका वर्हिणी-कला ॥ ९६

वामाचार-प्रिया वह्निर्वामाचार-परायणा।
वामाचार - रता देवी वामदेव - प्रियोत्तमा ॥ ९७

बुद्धेन्द्रिया विबुद्धा च बुद्धाचरण-मालिनी ।
बन्ध-मोचन-कर्त्री च वारुणा वरुणालया ॥ ९८

शिवा शिव-प्रिया शुद्धा शुद्धाङ्गी शुक्ल-वर्णिका ।
शुक्ल-पुष्प-प्रिया शुक्ला शिव-धर्म-परायणा ॥ ९९

शुक्लस्था शुक्लिनी शुक्ल-रूपा शुक्ल-पशु-प्रिया ।
शुक्रस्था शुक्रिणी शुक्रा शुक्र-रूपा च शुक्रिका ॥ १००

षण्मुखी च षडङ्गा च षट्-चक्र-विनिवासिनी ।
षड्-ग्रन्थि-युक्ता षोढा च षण्माता च षडात्मिका ॥१०१

षडङ्ग-युवती देवी षडङ्ग - प्रकृतिर्वशी ।
षडानना षड्रसा च षष्ठी षष्ठेश्वरी प्रिया ॥ १०२

षड्ज-वादा षोडशी च षोढा-न्यास-स्वरूपिणी ।
षट्-चक्र-भेदन-करी षट्-चक्रस्थ-स्वरूपिणी ॥ १०३

षोडश-स्वर-रूपा च षण्मुखी षट्-पदान्विता ।
सनकादि-स्वरूपा च शिव-धर्म-परायणा ॥ १०४

सिद्धा सिद्धेश्वरी शुद्धा सुर-माता स्वरोत्तमा ।
सिद्ध-विद्या सिद्ध-माता सिद्धा सिद्ध-स्वरूपिणी ॥१०५

हरा हरि-प्रिया हारा हरिणी हार-युक् तथा ।
हरि-रूपा हरि-धारा हरिणाक्षी हरि-प्रिया ॥ १०६

हेतु-प्रिया हेतु-रता हिता-हित-स्वरूपिणी ।
क्षमा क्षमावती क्षीता क्षुद्र-घण्टा-विभूषणा ॥ १०७

क्षयङ्करी क्षितीशा च क्षीण-मध्य-सुशोभना ।
अजानन्ता अपर्णा च अहल्या शेष-शायिनी ॥ १०८

स्वान्तर्गता च साधूनामन्तरानन्त-रूपिणी ।
अरूपा अमला चार्द्धा अनन्त-गुण-शालिनी ॥ १०९

स्व-विद्या विद्यका विद्याविद्या चार्विन्दु-लोचना ।
अपराजिता जात-वेदा अजपा अमरावती ॥ ११०

अल्पा स्वल्पा अनल्पाऽऽद्या अणिमा-सिद्धि-दायिनी ।
अष्ट-सिद्धि-प्रदा देवी रूप-लक्षण-संयुता ॥ १११

अरविन्द-मुखी देवी भोग-सौख्य-प्रदायिनी ।
आदि-विद्या आदि-भूता आदि-सिद्धि-प्रदायिनी ॥ ११२

सीत्कार-रूपिणी देवी सर्वासन-विभूषिता ।
इन्द्र-प्रिया च इन्द्राणी इन्द्र-प्रस्थ-निवासिनी ॥ ११३

इन्द्राक्षी इन्द्र-वज्रा च इन्द्रमद्योक्षिणी तथा ।
ईला काम-निवासा च ईश्वरीश्वर-वल्लभा ॥ ११४

जननी चेश्वरी दीना भेदा चेश्वर-कर्म-कृत् ।
उमा कात्यायनी ऊर्ध्वा मीना चोत्तर-वासिनी ॥ ११५

उमा-पति-प्रिया देवी शिवा चोङ्कार-रूपिणी ।
उरगेन्द्र - शिरो - रत्ना उरगोरग-वल्लभा ॥ ११६

उद्यान-वासिनी माला प्रशस्त-मणि-भूषणा ।
ऊर्ध्व-दन्तोत्तमाङ्गी च उत्तमा चोर्ध्व-केशिनी ॥ ११७

उमा सिद्धि-प्रद्रा या च उरगासन-संस्थिता ।
ऋषि-पुत्री ऋषिच्छन्दा ऋद्धि-सिद्धि-प्रदायिनी ॥११८

उत्सवोत्सव-सीमन्ता कामिका च गुणान्विता ।
एला एकार-विद्या च एणी विद्याधरा तथा ॥ ११९

ॐकार-वलयोपेता ॐकार-परमा - कला ।
ॐ वद वद वाणी च ॐकाराक्षर-मण्डिता ॥ १२०

ऐन्द्री कुलिश-हस्ता च ॐलोक-पर-वासिनी ।
ॐकार-मध्य-वीजा च ॐनमो-रूप-धारिणी ॥ १२१

पर-ब्रह्म-स्वरूपा च अंशुकांशुक-वल्लभा ।
ॐकारा अः फट्-मन्त्रा च अक्षाक्षर-विभूषिता ॥ १२२

अमन्त्रा मन्त्र-रूपा च पद-शोभा-समन्विता ।
प्रणवोङ्कार-रूपा च प्रणवोच्चार-भाक् पुनः ॥ १२३

ह्रींकार-रूपा ह्रींकारी वाग्वीजाक्षर-भूषणा ।
हृल्लेखा सिद्धि-योगा च हृत्-पद्मासन-संस्थिता ॥ १२४

वीजाख्या नेत्र-हृदया ह्रीं-वीजा भुवनेश्वरी ।
क्लीं-कामराजा क्लिन्ना च चतुर्वर्ग-फल-प्रदा ॥ १२५

क्लींक्लींक्लीं-रूपिका-देवी क्रींक्रींक्रीं-नामधारिणी ।
कमला शक्ति-वीजा च पाशांकुश-विभूषिता ॥ १२६

श्रीं श्रींकारा महा-विद्या श्रद्धा श्रद्धावती तथा ।
ॐऐंक्लींह्रींश्रीं परा च क्लींकारी परमा कला ॥१२७

ह्रींक्लींश्रींकार-रूपा च सर्व-कर्म-फल-प्रदा ।
सर्वाढ्या सर्व-देवी च सर्व-सिद्धि-प्रदा तथा ।। १२८

सर्वज्ञा सर्व-शक्तिश्च वाग्-विभूति-प्रदायिनी ।
सर्व-मोक्ष-प्रदा देवी सर्व-भोग-प्रदायिनी ।। १२९

गुणेन्द्र-वल्लभा वामा सर्व-शक्ति-प्रदायिनी ।
सर्वानन्द-मयी चैव सर्व-सिद्धि-प्रदायिनी ।। १३०

सर्व-चक्रेश्वरी देवी सर्व-सिद्धेश्वरी तथा ।
सर्व-प्रियङ्करी चैव सर्व-सौख्य-प्रदायिनी ।। १३१

सर्वानन्द-प्रदा देवी ब्रह्मानन्द-प्रदायिनी ।
मनो-वांछित-दात्री च मनो-बुद्धि-समन्विता ।। १३२

अकारादि-क्षकारान्ता दुर्गा दुर्गति-नाशिनी ।
पद्म-नेत्रा सुनेत्रा च स्वधा स्वाहा वषट्-करी ।। १३३

स्व-वर्गा देव-वर्गा चतुर्वर्गा च समन्विता ।
अन्तःस्था वेश्म-रूपा च नव-दुर्गा नरोत्तमा ।। १३४

तत्त्व-सिद्धि-प्रदा नीला तथा नील-पताकिनी ।
नित्य-रूपा निशाकारी स्तंभिनी मोहिनीति च ।। १३५

वशङ्करी तथोच्चाटी उन्मादी कर्षिणीति च ।
मातङ्गी मधुमत्ता च अणिमा लघिमा तथा ।। १३६

सिद्धा मोक्ष-प्रदा नित्या नित्यानन्द-प्रदायिनी ।
रक्ताङ्गी रक्त-नेत्रा च रक्त-चन्दन-भूषिता ।। १३७

स्वल्प-सिद्धिः सु-कल्पा च दिव्य-चारण-शुक्रभा ।
संक्रांतिः सर्व-विद्या च सप्त-वासर-भूषिता ।। १३८

प्रथमा च द्वितीया च तृतीया च चतुर्थिका ।
पञ्चमी चैव षष्ठी च विशुद्धा सप्तमी तथा ।। १३९

अष्टमी नवमी चैव दशम्येकादशी तथा ।
द्वादशी त्रयोदशी च चतुर्दश्यथ पूर्णिमा ।। १४०

अमावास्या तथा पूर्वा उत्तरा परि-पूर्णिमा ।
खड्गिनी चक्रिणी घोरा गदिनी शूलिनी तथा ।। १४१

भुशुण्डी चापिणी बाणा सर्वायुध-विभूषणा ।
कुलेश्वरी कुल-वती कुलाचार-परायणा ।। १४२

कुल-कर्म-सुरक्ता च कुलाचार-प्रवर्द्धिनी ।
कीर्तिः श्रीश्च रमा रामा धर्मायै सततं नमः ।। १४३

क्षमा धृतिः स्मृतिर्मेधा कल्प-वृक्ष-निवासिनी ।
उग्रा उग्र-प्रभा गौरी वेद-विद्या-विबोधिनी ।। १४४

साध्या सिद्धा सुसिद्धा च विप्र-रूपा तथैव च ।
काली कराली काल्या च काल-दैत्य-विनाशिनी।। १४५

कौलिनी कालिका चैव कचटतप-वर्णिका ।
जयिनी जय-युक्ता च जयदा जृम्भिणी तथा ।। १४६

स्राविणी द्राविणी देवी भरुण्डा विन्ध्य-वासिनी ।
ज्योतिर्भूता च जयदा ज्वाला-माला-समाकुला ।। १४७

भिन्ना भिन्न-प्रकाशा च विभिन्ना भिन्न-रूपिणी ।
अश्विनी भरणी चैव नक्षत्र-सम्भवान्विता ॥ १४८

काश्यपी विनता ख्याता दितिजा दितिरेव च ।
कीर्तिः काम-प्रिया देवी कीर्त्या कीर्ति-विवर्द्धिनी॥ १४९

सद्यो मांस-समालब्धा सद्यश्छिन्नासि-शङ्करा ।
दक्षिणा चोत्तरा पूर्वा पश्चिमा दिक् तथैव च ॥ १५०

अग्नि-नैर्ऋति-वायव्या ऐशानी दिक् तथा स्मृता ।
ऊर्ध्वाङ्गाधो-गता श्वेता कृष्णा रक्ता च पीतका॥१५१

चतुर्वर्गा चतुर्वर्णा चतुर्मात्रात्मिकाक्षरा ।
चतुर्मुखी चतुर्वेदा चतुर्विद्या चतुर्मुखा ॥ १५२

चतुर्गणा चतुर्माता चतुर्वर्ग - फल - प्रदा ।
धात्री विधात्री मिथुना नारी नायक-वासिनी ॥१५३

सुरा मुदा मुद-वती मोदिनी मेनकात्मजा ।
ऊर्ध्व-काली सिद्धि-काली दक्षिणा कालिका शिवा॥१५४

नील्या सरस्वती सत्वा बगला छिन्नमस्तका ।
सर्वेश्वरी सिद्ध - विद्या परा परम - देवता ॥ १५५

हिंगुली हिंगुलाङ्गी च हिंगुलाधर-वासिनी ।
हिंगुलोत्तम-वर्णाभा हिंगुलाभरणा च सा ॥ १५६

जाग्रती च जगन्माता जगदीश्वर-वल्लभा ।
जनार्दन-प्रिया देवी जय-युक्ता जय-प्रदा ॥ १५७

जगदानन्द-कारी च जगदाह्लाद-कारिणी ।
ज्ञान-दान-करी यज्ञा जानकी जनक-प्रिया ॥ १५८

जयन्ती जयदा नित्या ज्वलदग्नि-सम-प्रभा ।
बिम्बाधरा च बिम्बोष्ठी कैलासाचल-वासिनी ॥१५९

विभवा वडवाग्निश्च अग्नि-होत्र-फल-प्रदा ।
मन्त्र-रूपा परा-देवी तथैव गुरु-रूपिणी ॥ १६०

गया गङ्गा गोमती च प्रभासा पुष्कराऽपि च ।
विन्ध्याचल-रता देवी विन्ध्याचल-निवासिनी॥ १६१

बहू बहु - सुन्दरी च कंसासुर - विनाशिनी ।
शूलिनी शूल-हस्ता च वज्रा वज्र-धरापि च ॥ १६२

दुर्गा शिवा शान्ति-करी ब्रह्माणी ब्राह्मण-प्रिया ।
सर्व-लोक-प्रणेत्री च सर्व-रोग-हराऽपि च ॥ १६३

मङ्गला शोभना शुद्धा निष्कला परमा कला ।
विश्वेश्वरी विश्व-माता ललिता हसितानना ॥ १६४

सदाशिवा उमा क्षेमा चण्डिका चण्ड-विक्रमा ।
सर्व - देव - मयी देवी सर्वागम - भयापहा ॥ १६५

ब्रह्मेश-विष्णु-नमिता सर्व-कल्याण-कारिणी ।
योगिनी योग-माता च योगीन्द्र-हृदय-स्थिता ॥ १६६

योगि-जाया योग-वती योगीन्द्रानन्द-योगिनी ।
इन्द्रादि-नमिता देवी ईश्वरी चेश्वर - प्रिया ॥ १६७

विशुद्धिदा भय - हरा भक्त - द्वेषि - भयङ्करी ।
भव-वेषा कामिनी च भेरुण्डा भय-कारिणी ॥१६८

बलभद्र - प्रियाकारा संसारार्णव - तारिणी ।
पञ्च-भूता सर्व-भूता विभूतिर्भूति-धारिणी ॥ १६९

सिंह-वाहा महा-मोहा मोह-पाश-विनाशिनी ।
मन्दुरा मदिरा मुद्रा मुदा मुद्गर-धारिणी ॥ १७०

सावित्री च महा-देवी पर-प्रिय-विनायिका ।
यम-दूती च पिङ्गाक्षी वैष्णवी शङ्करी तथा ॥ १७१

चन्द्र-प्रिया चन्द्र-रता चन्दनारण्य-वासिनी ।
चन्दनेन्द्र-समायुक्ता चण्ड-दैत्य-विनाशिनी ॥ १७२

सर्वेश्वरी यक्षिणी च किराती राक्षसी तथा ।
महा-भोग-वती देवी महा - मोक्ष-प्रदायिनी ॥ १७३

विश्व-हन्त्री विश्व-रूपा विश्व-संहार-कारिणी ।
धात्री च सर्व-लोकानां हित-कारण-कामिनी ॥ १७४

कमला सूक्ष्मदा देवी धात्री हर-विनाशिनी ।
सुरेन्द्र-पूजिता सिद्धा महा-तेजोवतीति च ॥ १७५

परा रूपवती देवी त्रैलोक्याकर्षण-कारिणी ।
शुभं ते कथितं देवि ! पीता-नाम-सहस्रकम् ॥ १७६

फल-श्रुति

पठेद् वा पाठयेद् वापि सर्व-सिद्धिर्भवेत् प्रिये !
इति मे विष्णुना प्रोक्तं महा-स्तम्भ-करं परम् ॥

प्रातःकाले च मध्याह्ने सन्ध्या-काले च पार्वति !
एक-चित्तः पठेदेतत् सर्व-सिद्धिर्भविष्यति ॥
एक-वारं पठेद्यस्तु सर्व - पाप - क्षयो भवेत् ।
द्वि - वारं पठेद्यस्तु विघ्नेश्वर - समो भवेत् ॥
त्रि-वारं पठनाद् देवि ! सर्वं सिद्धयति सर्वथा ।
स्तवस्यास्य प्रभावेण साक्षाद् भवति सुव्रते ॥
मोक्षार्थी लभते मोक्षं धनार्थी लभते धनम् ।
विद्यार्थी लभते विद्यां तर्क-व्याकरणान्विताम् ॥
महित्वं वत्सरान्ताच्च शत्रु-हानिः प्रजायते ।
क्षोणी-पतिर्वशस्तस्य स्मरेण सदृशो भवेत् ॥
यः पठेत् सर्वदा भक्त्या श्रेयस्तु भवति प्रिये !
गणाध्यक्ष-प्रतिनिधिः कविः काव्य-परो वरः ॥
गोपनीयं प्रयत्नेन जननी-जार-वत् सदा ।
हेतु-युक्तो भवेन्नित्यं शक्ति-युक्तः सदा भवेत् ॥
य इदं पठते नित्यं शिवेन सदृशो भवेत् ।
जीवन् धर्मार्थ-भोगी स्यान्मृतो मोक्ष-पतिर्भवेत् ॥
सत्यं सत्यं महा-देवि ! सत्यं सत्यं न संशयः ।
स्तवस्यास्य प्रभावेण देवेन सह मोदते ॥
सुचित्ताश्च सुराः सर्वे स्तवराजस्य कीर्तनात् ।
पीताम्बर - परीधानां पीत - गन्धानुलेपनम् ॥
परमोदय-कीर्तिः स्यात् स्मरतः सुर-सुन्दरि ॥

॥ श्रीउत्कट-शम्बरे नागेन्द्र-प्रयाण-तन्त्रे षोडश-साहस्रे विष्णु-शङ्कर-सम्वादे पीताम्बरा-सहस्रनाम-स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥